DISTRICT JUDGE (ENTRY LEVEL) MAIN WRITTEN EXAM-2023

कुल प्रश्नों की संख्या : 5
Total No. of Questions : 5

अनुक्रमांक/Roll No. | | | | |

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 09
No. of Printed Pages : 09

Second Question Paper
द्वितीय प्रश्न–पत्र

ARTICLE & SUMMARY WRITING
लेख और सारांश लेखन

समय – 3:00 घण्टे
Time – 3:00 Hours

पूर्णांक – 100
Maximum Marks – 100

निर्देश :–
Instructions :-

1. All questions are compulsory. Please, adhere to the word limit of answers as specified in question paper.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। जहाँ प्रश्न के उत्तर की शब्द–सीमा प्रश्न के साथ दी गई है, उसका अवश्य पालन करें।

2. Write your Roll No. in the space provided on the first page of Answer-Book / Supplementary Sheet. Writing of his/her own Name or Roll No. or any mark of identification in any form or any Number or Name or Mark, by which the Answer Book of a candidate may be distinguished/ identified from others, in any place of the Answer Book not provided for, is strictly prohibited and shall, in addition to other grounds, entail cancellation of his/her candidature.
   उत्तर पुस्तिका/अनुपूरक शीट के प्रथम पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर ही अनुक्रमांक अंकित करें। उत्तर पुस्तिका में निर्दिष्ट स्थान के अतिरिक्त किसी स्थान पर अपना नाम या अनुक्रमांक या किसी भी रूप में पहचान का कोई चिन्ह अथवा कोई भी क्रमांक या नाम या चिन्ह अंकित करना, जिससे कि परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका को अन्य उत्तर पुस्तिकाओं से अलग किया/ पहचाना जा सके, सर्वथा प्रतिषिद्ध है और अन्य आधारों के अतिरिक्त, उसकी अभ्यर्थिता निरस्त किये जाने का आधार होगा।

3. In case there is any variance either printing or of a factual nature, out of the Hindi and English versions of the question, the English version will be treated as standard.
   किसी प्रश्न के हिन्दी तथा अंग्रेजी रूपांतर में किसी प्रकार की कोई मुद्रण या तथ्यात्मक भिन्नता होने की दशा में, अंग्रेजी रूपांतर को मानक माना जायेगा।

4. Writing of all answers must be clear & legible. If the writing of Answer Book written by any candidate is not clear or illegible in view of Valuer then the valuation of such Answer Book may not be considered.
   सभी उत्तरों की लिखावट स्पष्ट और पठनीय होना आवश्यक है। किसी परीक्षार्थी के द्वारा लिखी गई उत्तर–पुस्तिका की लिखावट यदि मूल्यांकनकर्त्ता के मत में अस्पष्ट या अपठनीय होगी तो उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकेगा।

P.T.O.

Q.1- Write an article either in English or in Hindi on the following *Social* topic :
निम्नलिखित सामाजिक विषय पर अंग्रेजी या हिन्दी में लेख लिखिए : —10

The Culture of Freebie : A Critical Analysis

मुफ्त उपहार संस्कृति : एक आलोचनात्मक विश्लेषण

Q.2- Write an article either in English or in Hindi on the following *legal* topic:
निम्नलिखित विधिक विषय पर अंग्रेजी या हिन्दी में लेख लिखिए : —10

Justice for Victim - Role of Judiciary

पीड़ित के लिए न्याय – न्यायपालिका की भूमिका

Q.3- Summarize the following legal passage into English (In around 1/3rd words of the passage given) :-
निम्नलिखित विधिक गद्यांश का अंग्रेजी में संक्षिप्तीकरण कीजिए (दिये गये गद्यांश के लगभग 1/3 शब्दों में) :– —20

Every activity that may be necessary for exercise of freedom of speech and expression or that may facilitate such exercise or make it meaningful and effective cannot be elevated to the status of a fundamental right as if it were part of the fundamental right of free speech and expression. Otherwise, practically every activity would become part of some fundamental right or the other and the object of making certain rights only as fundamental rights with different permissible restrictions would be frustrated.

Freedom of movement across frontiers in either direction, and inside frontiers as well, was a part of our heritage. Travel abroad, like travel within the country, may be necessary for livelihood. It

may be as close to the heart of the individual as the choice of what he eats, or wears, or reads. Freedom of movement is basic in our scheme of values. Freedom of movement has been a part of our ancient tradition which always upheld the dignity of man and saw in him the embodiment of the Divine. The Vedic seers knew no limitations either in the locomotion of the human body or in the flight of the soul to higher planes of consciousness.

Even in the post-Upanishadic period, followed by the Buddistic era and the early centuries after Christ, the people of this country went to foreign lands in pursuit of trade and business or in search of knowledge or with a view to shedding on others the light of knowledge imparted to them by their ancient sages and seers. India expanded outside her borders : her ships crossed the ocean and the fine superfluity of her wealth brimmed over to the east as well as to the west. Her cultural messengers and envoys spread her arts and epics in South-East Asia and her religions conquered China and Japan and other far Eastern countries and spread westward as far as Palestine and Alexandria. Even at the end of the last and the beginning of the present century, our people sailed across the seas to settle down in the African countries.

Freedom of movement at home and abroad is a part of our heritage and, as already pointed out, it is a highly cherished right essential to the growth and development of the human personality and its importance cannot be over-emphasised. But it cannot be said to be part of the right of free speech and expression. It is not of the same basic nature and character as freedom of speech and

expression. When a person goes abroad, he may do so for a variety of reasons and it may not necessarily and always be for exercise of freedom of speech and expression. Every travel abroad is not an exercise of right of free speech and expression and it would not be correct to say that whenever there is a restriction on the right to go abroad, *ex necessitate* it involves violation of freedom of speech and expression.

Q.4- Translate the following 30 Sentences into English :-
निम्नलिखित 30 वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :— **—30**

(1) यदि न्यायालय का यह समाधान हो जाता है कि मृत्युकालीन कथन सत्य है और स्वेच्छया किया गया है, तो संपुष्टि के बिना भी उसके आधार पर दोषसिद्धि की जा सकती है ।

(2) ऐसा प्रतीत होता है कि यह इस प्रकार की संदेहजनक युक्ति अपनाकर भ्रम पैदा करने और अवांछित फायदा उठाने का सुविचारित प्रयास है।

(3) जहाँ न्यायालय का समाधान हो जाता है कि मुख्य बातों से ध्यान हटाते हुए न्याय की दिशा को मोड़ने का प्रयास किया गया है, वहाँ न्यायालय को दूषित पहल को गंभीरता से लेना होता है।

(4) लोक अभियोजक न केवल साक्ष्य की कमी के आधार पर बल्कि न्याय, लोक व्यवस्था, शांति और प्रशांति जैसे व्यापक उद्देश्यों को अग्रसर करने की दृष्टि से अन्य सुसंगत कारणों से भी अभियोजन वापस ले सकेगा।

(5) चाहे सरकारी सेवक को यह कितनी भी कठोर और प्रपीड़क प्रतीत हो, इस न्यायालय को यह ध्यान रखना होगा कि दूसरे परन्तुक में अंतर्निहित उद्देश्य लोक नीति, लोक हित और लोक कल्याण है।

(6) मिथ्या साक्ष्य देने के लिये अन्वेषण अधिकारी एवं साक्षीगण के अभियोजन हेतु निर्देश उन्हें सुनवाई का अवसर प्रदान किये बिना दिया जा सकता है।

(7) आस्था और विश्वास को किसी भी न्यायिक जांच के माध्यम से विनिश्चित नहीं किया जा सकता।

(8) भारतीय समाज के सामाजिक ताने–बाने में धर्म की गहरी पैठ के कारण भी धार्मिक

स्वतंत्रता के अधिकार को निरपेक्ष नहीं बनाया गया था।

(9) संशोधन की शक्ति का प्रयोग करते हुए किसी नियंत्रित संविधान को अनियंत्रित संविधान में बदला जा सकता है।

(10) संहिता की धारा 319 के अधीन शक्ति न्यायालय को यह सुनिश्चित करने के लिये प्रदान की गयी है कि अपराध के सभी दोषियों को कारागार में डालकर समाज के प्रति न्याय किया जाये।

(11) वह अपराध के सभी अपराधियों को निरूद्ध करने के द्वारा समाज के प्रति न्यायालय की आबद्धता के निर्वहन को समर्थ बनाते हुये अलंघनीय शक्ति है।

(12) निर्णयाधार के नियम का सुसंगतता के लिये अनुपालन किया जाता है, परंतु वह प्रशासनिक विधि में उतना सुदृढ़ नहीं है, जितना लोक विधि में होता है। विधि भी न्याय के समक्ष झुक जाती है।

(13) अपराध बड़ी संख्या में पीड़ितों को प्रभावित करता है जो शारीरिक, सामाजिक, वित्तीय या भावनात्मक चोट या क्षति झेलते हैं, जिन्हें न्याय तक आसान पहुंच प्रदान करके तुरंत निवारण की आवश्यकता होती है।

(14) संबंधित साक्षियों के साक्ष्य पर विवेकपूर्ण संवीक्षा को लागू करने के द्वारा विचार किया जाना चाहिये।

(15) न्याय ऐसा सद्गुण है, जो सभी अवरोधों को समाप्त कर देता है, न तो प्रक्रिया के नियम, न ही विधि की तकनीकें उसमें बाधा डाल सकती हैं।

(16) कोई मामला जमानत देने के लिये उपयुक्त है या नहीं, इसका निर्धारण करने में कई कारकों का संतुलन शामिल है, जिसमें अपराध की प्रकृति, सजा की गंभीरता और अभियुक्त की संलिप्तता का प्रथम दृष्टया दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।

(17) यदि न्यायालय के समक्ष रखी गई सामग्री आरोपी के खिलाफ गम्भीर संदेह का खुलासा करती है, जिसे पूर्णतः स्पष्ट नहीं किया गया है, तो न्यायालय आरोप तय करने और मुकदमे को आगे बढाने में पूरी तरह से न्याय संगत होगी।

(18) भले ही भूदान धारक धारा–33 के अंतर्गत भूमि स्वामी के अधिकार अर्जित कर लेता है, लेकिन वह अधिनियम की धारा–30 के अंतर्गत यथा उपबंधित के सिवाय उसकी भूमि का कोई भी हित अंतरित नहीं कर सकता।

(19) सर्वोच्च न्यायालय ने निष्कर्षित किया है कि आरोप पत्र का, अनुशासनिक प्राधिकारी द्वारा भी अनुमोदन अथवा हस्ताक्षरित होना अपेक्षित है एवं इसके बिना

किसी भी अन्य प्राधिकारी के द्वारा उसे जारी नहीं किया जा सकता।

(20) मध्यक्षेपकर्ता द्वारा प्रस्तुत परिवाद पर, प्राधिकारियों द्वारा संज्ञान लिया गया था एवं आक्षेपित आदेश पारित किया गया था, ऐसी परिस्थितियों में परिवादी/मध्यक्षेपकर्ता को मामले में मध्यक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।

(21) भले ही कटघरे में पहचान, पुलिस द्वारा पहचान परेड से पहले न हुई हो, तब भी वह ग्राह्य है क्योंकि यह सारभूत साक्ष्य है और यदि साक्षी विश्वसनीय पाया जाता है तो इस पर विश्वास किया जा सकता है।

(22) पुलिस अन्वेषण में घटनास्थल का नक्शा, जप्ती पत्रक, स्थिर छायाचित्र इत्यादि को सामान्यतः साक्ष्य का पर्याप्त भाग माना जाता है।

(23) जब दो दृष्टिकोण संभव हों एवं विचारण न्यायालय ने अभियुक्त के पक्ष वाला दृष्टिकोण लिया है तो उस पर केवल इस आधार पर विघ्न नहीं डालना चाहिये कि एक अन्य दृष्टिकोण संभव था।

(24) अपीलार्थीगण को अपीलीय न्यायालय के समक्ष दण्डादेश के प्रश्न पर तर्क करते समय अभिलेख पर सभी सुसंगत सामग्री प्रस्तुत करने के लिये समुचित एवं पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिये।

(25) अपीलार्थी के विरूद्ध विनिर्दिष्ट अभिकथन है कि उसने मृतक पर न केवल हमला किया बल्कि उसे फर्जी नाम से चिकित्सालय में भर्ती कराया एवं फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र भी बनवाया।

(26) आरोप पत्र, किसी पुलिस अधिकारी के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया परन्तु यह सहायक जिला आबकारी अधिकारी द्वारा प्रस्तुत परिवाद प्रतीत होता है, जो अधिनियम की धारा–2 (7) के अनुसार एक ''आबकारी अधिकारी'' होता है।

(27) एक न्यायाधीश सभी न्यायिक कर्तव्यों को, जिनमें आरक्षित निर्णयों को सुनाना भी है, प्रभावी रूप से ऋजुतापूर्वक, युक्तियुक्त, शीघ्रता से निष्पादित करेगा।

(28) एक न्यायाधीश का व्यवहार एवं आचरण लोगों का न्यायपालिका में विश्वास पुनःस्थापित करने वाला होना चाहिए।

(29) सर्वशक्तिमान से प्रतिदिन प्रार्थना करें कि वह आपको सत्यनिष्ठा, बुद्धि और विनम्रता के साथ न्याय करने की शक्ति और साहस प्रदान करे।

(30) न्यायिक नैतिकता के सिद्धांतों को जानना ही काफी नहीं है। नैतिकता के उन सिद्धांतों का निरंतर और चौकन्ने रहकर व्यवहार भी करें।

Q.5- Translate the following 30 Sentences into Hindi :-
निम्नलिखित 30 वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : —30

(1) The concept of cruelty depends upon the type of life, the parties are accustomed to or their economic and social conditions.

(2) Religion' is not necessarily theistic. A religion has its basis in a system of beliefs and doctrines.

(3) It is also a trite law that a study has to be undertaken before a section of the people can be identified as being belonging to Backward Class people.

(4) There is overwhelming evidence including the evidence of the injured witness to the effect that all the three appellants fired at the victim.

(5) The power of the court under Order 18 Rule 17 CPC is discretionary and has to be exercised with the greatest care and only in exceptional circumstances.

(6) On hearing a cry of her husband, Seema came out. The appellant threatened her at the point of a knife asking her not to shout.

(7) It is travesty of justice, as the appellant was not given a fair opportunity to defend himself.

(8) The person sought to be made liable should be in charge of and responsible for the conduct of the business of the company at the relevant time.

(9) Rules of natural justice imply fairness, reasonableness, equity and equality.

(10) In the pursuit for expeditious disposal, the cause of justice must never be allowed to suffer or be sacrificed.

(11) Mental cruelty is the conduct of other spouse which causes mental

suffering or fear to the matrimonial life of the other.

(12) The disciplinary authority is not bound by the judgment of the criminal court if the evidence that is produced in the department inquiry is different from that produced during the criminal trial.

(13) The extreme penalty of death need not be inflicted except in gravest cases of extreme culpability.

(14) The courts have to display a greater sense of responsibility and to be more sensitive while dealing with charges of sexual assault on women.

(15) In considering the question of custody of a minor, the court has to be guided by the only consideration of the welfare of the child.

(16) Under the law the burden is placed in the first place upon the wife to show that the means of her husband are sufficient.

(17) It is a safeguard for the protection of the people against the vagaries of the legislature and the executive.

(18) The mortgagor's right of redemption and the mortgagee's right of foreclosure are coextensive.

(19) A Judge who genuinely feels that a settlement is appropriate in a case and pursues his suggestions with the parties, should recuse himself from hearing it, if the settlement does not materialize.

(20) It is settled that a little difference in facts, an additional fact or a different statute applicable in a given case may make a lot of difference in the precedential value of a decision.

(21) Finger print analysis is scientific analysis, credibility of which is not liable to be questioned without there being any extraordinary reasons.

(22) Apex court concluded that the doctrine of legitimate expectations cannot be pressed into service, where public interest is likely to suffer against personal interest of a party.

(23) When there is a challenge to lack of inherent jurisdiction, same can be raised at any stage even in execution and collateral proceeding.

(24) Eviction petition cannot be rejected on mere assertion of tenant in application under Order 7 Rule 11 CPC regarding lack of bonafide requirement of landlord.

(25) Pension and gratuity are not bounties but are hard earned properties of employee by rendering his services to the department and are declared to be a constitutional right.

(26) If accused destroys or conceals the weapon of offence, then he cannot take advantage of his own misdeed and this would not give any dent to prosecution case.

(27) Where indiscriminate firing took place and people were running helter-skelter for saving their lives, 3 died and 10 injured, then minute description of incident would certainly create doubt.

(28) It is the golden rule of interpretation that hardship, inconvenience, injustice, absurdity and anomaly are to be avoided.

(29) Apex Court concluded that mistake or error apparent on the face of record means that mistake or error which is prima facie visible and does not require any detail examination.

(30) It cannot be disputed that an unstamped or insufficiently stamped document can be admitted in evidence on taking deficit stamp duty and penalty as adjudicated under the Stamp Act.

*****